BA Part-II
History Notes
By- Dr. Durga Bhawani

2018 कार्नवालिस B A Part II
History (sub) ~~Paper~~

चार्ल्स कार्नवालिस का जन्म 31 Dec. 1738 को हुआ था। उसके पिता अर्ल कार्नवालिस ने उसकी शिक्षा का उचित प्रबन्ध कर दिया था। ईटन स्कूल में शिक्षा प्राप्त करने के बाद वह सेना में भर्ती हुआ तथा कुछ दिनों तक ट्यूरिक की एकेडमी में रहा। वह राजनीति में भी दिलचस्पी लेता था। 1760 में वह पार्लियामेंट की कामन्स - सभा का सदस्य निर्वाचित हुआ। अपने पिता की मृत्यु के बाद वह अर्ल बना दिया गया। संसद सदस्य के रूप में अमेरिका पर कर लगाने की नीति का उसने विरोध किया। 1776 में अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में ब्रिटिश सेनापति था। 1786 में वह भारत का गवर्नर - जनरल बन कर आया। कार्नवालिस का चरित्र एवं आचरण उच्च कोटि का था और वह धन - लोलुप नहीं था। उसमें संगठन तथा सुधार की मौलिक प्रतिभा थी। अतः भारत पहुँचते ही उसने सुधार कार्य आरंभ किया। इस प्रकार उसने निम्नलिखित सुधार कार्य किए। —

1. प्रशासनिक सुधार —
2. न्यायिक सुधार
3. व्यापारिक सुधार
4. भूमि सम्बन्धी सुधार।

(1) ~~प्रशासनिक~~ प्रशासनिक सुधार — ईस्ट इंडि
के कर्मचारी अयोग्य और भ्रष्ट
वे निःसंकोच रिश्वत, भेंट-उपहार
आदि लिया करते थे। इसका प्रध
कारण उनके वेतन की न्यूनता
कार्नवालिस ने इस भ्रष्टाचार को
करने के लिए कम्पनी के कर्मचारि
की वेतन में वृद्धि कर दी। सिफारि
पर अयोग्य व्यक्तियों की नियुक्ति बं
कर दी क्योंकि ये अधि उच्च घरानों
संबंध रखते थे तथा अब योग्यता
आधार पर नियुक्तियाँ होती थीं। इससे
प्रशासन में भ्रष्टाचार की संभावना
कम हो गयी। उच्च पदों पर यूरोपि
की नियुक्ति होती थी क्योंकि कार्न
वालिस भारतीयों पर विश्वास नहीं कर
था। अतः उच्च पदों के लिए भारतीय
के रास्ते बंद कर दिए गए। पहले
जमींदार लोग ही पुलिस का काम
करते थे लेकिन कार्नवालिस ने जमींद
से पुलिस अधिकार ले लिए और
का काम सरकारी कर्मचारियों को स
दिया। प्रत्येक इलाकों में दरोगा तथ
सुपरिंटेंडेंट नियुक्त किया गया। अभी
तक कम्पनी में सैनिकों की भर्ती
कोई समुचित व्यवस्था नहीं थी अत
कार्नवालिस के अनुरोध से नियंत्रण
बोर्ड के सदस्यों ने इंगलैंड में
सैनिक भर्ती करने की समुचित व्यव
कर दी।

(2) न्यायिक सुधार — कार्नवालिस ने सम्पूर्ण कम्पनी राज्य को 23 जिलों में बाँट दिया और प्रत्येक जिले में एक कलक्टर की नियुक्ति की। न्याय प्रशासन के लिए प्रत्येक जिले में अंगरेज न्यायाधीश नियुक्त किए गए जो जिला जज कहलाते थे। जिला अदालत के नीचे छोटी व दीवानी तथा फौजदारी अदालतें होती थीं। जिसमें मुंसिफ तथा सदर अमीन न्यायाधीश का काम करते थे। कार्नवालिस ने जिला अदालत के ऊपर कलकत्ता, ढाका, मुर्शिदाबाद और पटना में चार अपील की अदालतों की स्थापना की। इन अदालतों के वकील वर्ष में दो बार अपने अधिकार क्षेत्र का दौरा करते थे। कार्नवालिस ने भारतीय कानूनों का संग्रह तैयार करवाया जिसे "कार्नवालिस कोड" कहते हैं। कार्नवालिस ने वकालत व्यवसाय को नियमित बनाने का प्रयत्न किया। वकीलों की फीस निर्धारित कर दी गई और अधिक फीस लेने पर उसे अयोग्य घोषित कर दिया जाता था। न्याय विभाग में काम करने वाले कर्मचारियों को कम वेतन मिलता था। जिससे वे रिश्वत, भेंट-उपहार आदि लिया करते थे। अतः कार्नवालिस ने न्याय विभाग के अधिकारियों के लिए अच्छे वेतन का प्रबन्ध कर दिया।

③ व्यापारिक सुधार — कार्नवालिस ने कम्पनी के व्यापारिक शासन में सुधार किए। एक Board of Trade की स्थापना की। पहले इसमें 11 सदस्य होते थे किन्तु कार्नवालिस ने इसके सदस्यों की संख्या घटाकर 5 कर दी। बोर्ड ऑफ ट्रेड को कलकत्ता कौंसिल के नियंत्रण में रख दिया। कम्पनी के नौकरों को माल खरीदने के लिए दिये जाने वाले धन को बंद कर दिया। उसने माल खरीदने का काम भारतीय व्यापारियों को सौंप दिया और कम्पनी के नौकरों को कमीशन एजेंट बना दिया। इस प्रकार कार्नवालिस ने भारतीय व्यापारियों तथा कारीगरों की भी हितों की रक्षा की।

④ भूमि-सम्बन्धी सुधार — भारतीय इतिहास में कार्नवालिस को भूमि सुधार के कारण एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। उसकी भूमि व्यवस्था स्थाई-प्रबंध के नाम से प्रसिद्ध है। इसका उद्देश्य लगान व्यवस्था में स्थायित्व स्थापित करना था। 1793 में कार्नवालिस को कम्पनी के संचालक समिति से स्वीकृति मिल गई और 22 March 1793 को स्थायी प्रबन्ध लागू कर दिया गया।

स्थायी प्रबंध को लागू करने के कई कारण थे। इस व्यवस्था ने राजा, ताल्लुकेदार जो जमींदार की एक ऐसी

श्रेणी उत्पन्न कर दी जिसका प्रभुत्व समाज पर छा गया। एक कारण यह भी था कि 64 वर्ष लगान की वसूली की नई-नई अवस्था करते-करते अंग्रेज अफसर थक गए थे। इससे आय घट रही थी। अतः भूमि लगान का स्थायी प्रबन्ध कर देना ही उचित समझा गया।

1793 में कार्नवालिस त्याग-पत्र देकर वापस इंगलैंड लौट गया। किंतु जब तक वह कम्पनी का गवर्नर रहा उसने बड़ी ईमानदारी से अपने उत्तरदायित्वों को पूरा किया। वह स्वयं ईमानदार और भ्रष्टा-चार विरोधी था। इस प्रकार, कार्नवालिस ने अनेक सुधार कार्य किए तथा ब्रिटिश प्रभुत्व का भी यथासंभव विस्तार किया और इसमें उसे सफलता भी मिली।

X